प्रश्न – आदिकाल के प्रमुख रचनाकार चंदबरदाई पर संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर – चंदबरदाई द्वारा रचित "पृथ्वीराज रासो" हिंदी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। वे दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान के सामन्त और राजकवि थे। महामहोपाध्याय पण्डित हरप्रसाद शास्त्री के अनुसार चंदबरदाई का जन्म लाहौर में 1168 ई० में हुआ था। शुक्ल जी भी इसी मत के समर्थक हैं। शुक्ल जी को हरप्रसाद शास्त्री ने चंद का एक वंशवृक्ष उपलब्ध कराया था जो उन्हें अपने को चंद का वंशज बताने वाले नाथूराम भाट से प्राप्त हुआ था। चंद के चार पुत्र थे, जिनमें से चौथे पुत्र का नाम जल्ह (जल्हड़) था कहीं इन्हें जल्हण भी कहा जाता था। जब मोहम्मद गौरी पृथ्वीराज को बन्दी बनाकर अपने साथ गजनी ले गया। तब चंद ने अपनी पुस्तक पृथ्वीराज रासो उसे सौंप दी थी। इस सम्बन्ध में यह उक्ति प्रसिद्ध है—

पुस्तक जल्हण हत्थ दै चलि गज्जन नृप राज।

कहा जाता है कि "रासो" को जल्हड़ ने ही पूर्ण किया था। चंदबरदाई पृथ्वीराज के सखा, सामंत एवं राजकवि थे। उन्हें भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य, छंद, ज्योतिष में दक्षता प्राप्त थी तथा उन्हें जालंधरी देवी की कृपा प्राप्त थी। वे सदैव पृथ्वीराज के साथ रहते थे। सुल्तान गौरी के द्वारा जब पृथ्वीराज को बंदी बनाकर गजनी ले जाया गया तो चंदबरदाई भी उनके साथ थे। वहाँ उन्होंने शब्दबेधी बाण पृथ्वीराज से चलवाकर तथा सुल्तान के बैठने का स्थान काव्य के माध्यम से सूचित कर मुहम्मद गौरी का काम तमाम करवा दिया। तत्पश्चात पृथ्वीराज और चंद ने कटार से आत्मघात कर लिया।

कुछ विद्वानों जैसे- प्रो. बूलर ने चंद के अस्तित्व को भी नकार दिया है और तर्क यह दिया है कि जयानक द्वारा रचित पृथ्वीराज विजय नामक संस्कृत काव्य में चंद का उल्लेख तक नहीं मिलता, किन्तु यह कोई ठोस तर्क नहीं है। किसी कृति में किसी कवि का उल्लेख न होने मात्र से उसका अस्तित्व नहीं मिट जाता। हो सकता है कि कवि सुलभ ईर्ष्यावश ऐसा किया हो। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने चंद के अस्तित्व को तो स्वीकार किया है किन्तु वे भी यह मानते हैं कि "पृथ्वीराज रासो अपने वर्तमान रूप में चंद द्वारा पूरा रचा हुआ प्रतीत नहीं होता।"

प्रबंध संग्रहों के सम्पादक मुनिजिन विजय के अनुसार- "चन्द कवि निश्चित रूप से एक ऐतिहासिक पुरुष था और वह दिल्लीश्वर हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज का समकालीन और उनका सम्मानित राजकवि था। उसी ने पृथ्वीराज के कीर्तिकलाप का वर्णन करने के लिए देशव्यापी प्राकृत भाषा में एक काव्य रचना की थी जो पृथ्वीराज रासो के नाम से प्रसिद्ध हुई।"

पृथ्वीराज रासो को विद्वान् विकसनशील महाकाव्य मानने के पक्ष में हैं, जिसमें समय-समय पर अनेक कवियों ने अपनी ओर से प्रक्षिप्त अंश जोड़ दिए। यह भी हो सकता है कि प्रारम्भ में यह ग्रंथ प्राकृत भाषा में रचा गया हो, बाद में गेय परम्परा से जुड़े होने के कारण इसकी भाषा में आवश्यक परिवर्तन-संशोधन होते रहे हों और यह अपने वर्तमान हिन्दी रूप को प्राप्त कर सका हो। चंद और पृथ्वीराज से जुड़ी हुई अनेक किंवदंतियाँ भी उसके अस्तित्व को प्रमाणित करती हैं। यह ठीक है कि चंद की जीवनी के सम्बन्ध में उपलब्ध सामग्री विश्वसनीय एवं संतोषजनक नहीं है तथापि उसके अस्तित्व को पूर्णतः नकारना अनुचित है।

मोबाइल- 7909046087
दिनांक 17/02/2023

प्रेषक:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)